निर्माण एक स्वप्न का

मेरी बैथ्यून का स्कूल

लेखन: रिचर्ड कैल्सो, संपादन: एलैक्स हेली

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

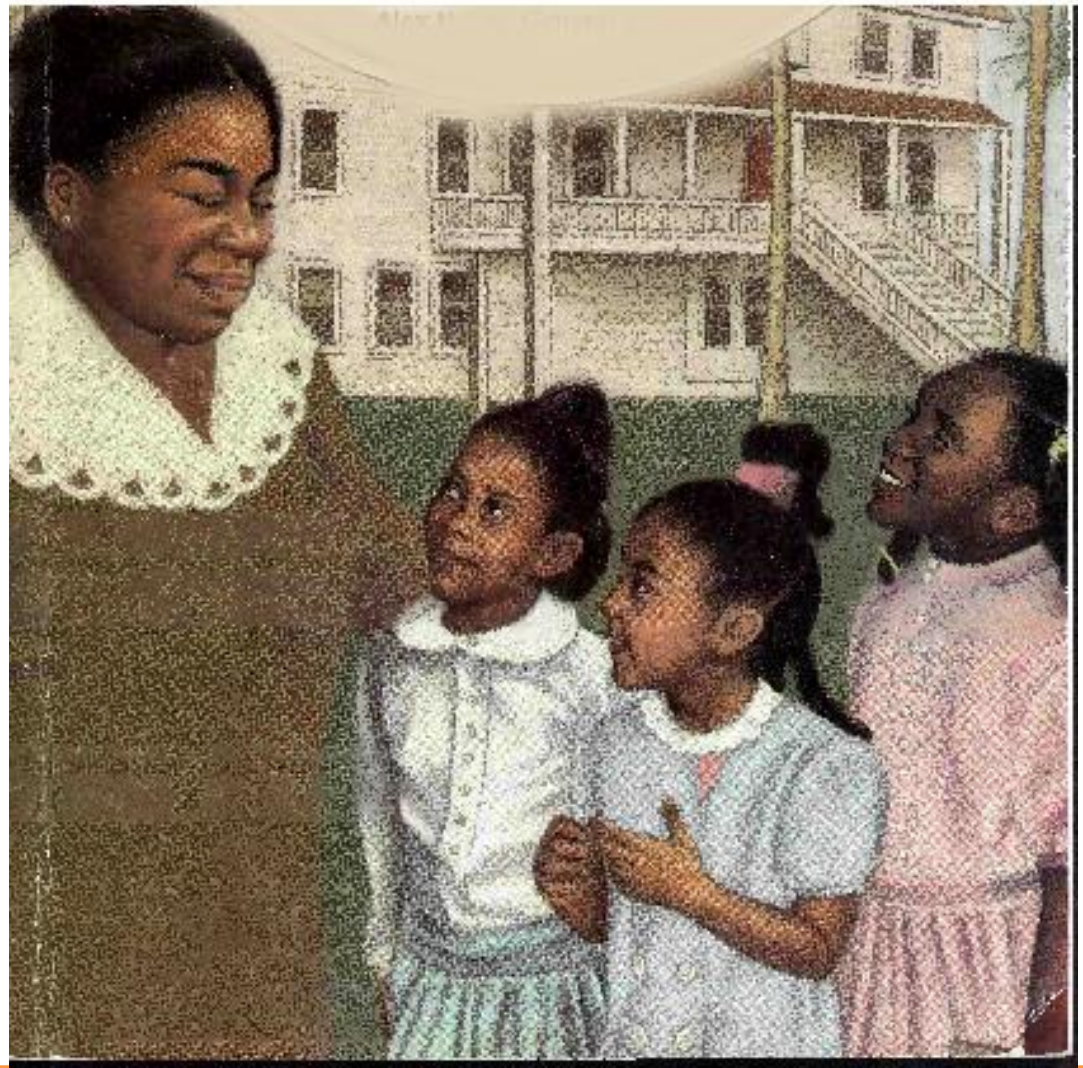

निर्माण एक स्वप्न का

मेरी बैथ्यून का स्कूल

लेखन: रिचर्ड कैल्सो,

संपादन: एलैक्स हेली

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

मेरी दादी
जोबर्नैस हेज़ल रेडमान कैल्सो
को समर्पित

अनुक्रम

अध्याय 1 सीखने का अवसर

अध्याय 2 कचरे के ढेर के पास वाली पुरानी केबिन

अध्याय 3 स्कूल के लिए पाई व गीत

अध्याय 4 दलदली ज़मीन बना स्कूल परिसर

अध्याय 5 आखिरकार एक असली स्कूल

उपसंहार

अनुकथा

टिप्पणियाँ

अध्याय 1
सीखने का अवसर

डेयटोना बीच, फ्लौरिडा, के स्टेशन में घुसते हुए रेलगाड़ी ने एक लम्बी सीटी दी। रेल पटरियों के पास ही कुछ काले लड़के और लड़कियाँ खेल रहे थे। जैसे ही रेलगाड़ी कुछ करीब आई वे यात्रियों को देख हाथ हिलाते हुए भाग खड़े हुए।

रेल के एक डब्बे की खिड़की से मिसेज मेरी मॅक्लिओड बैथ्यून और उनका चार वर्षीय बेटे एल्बर्ट ने भी जवाब में हाथ हिलाया। वे बच्चों को देख खुश थीं, पर उन्हें उनकी फिक्र भी हुई। क्योंकि उनका मानना था कि बच्चों को स्कूल में पढ़ना-लिखना सीखते होना चाहिए था।

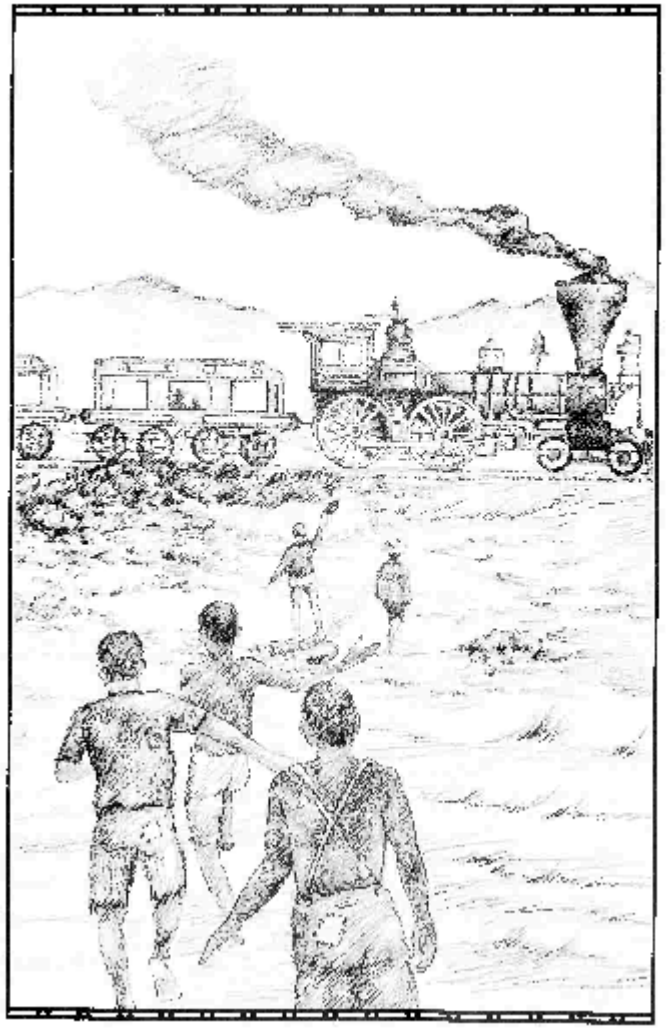

मिसेज बैथ्यून का मानना था कि बच्चों को ऐसे कौशल सिखाए जाने चाहिए जो बड़े होने पर अच्छी नौकरियाँ पाने में उनकी मदद करें। यही कारण था कि 1904 के सितम्बर माह के इस गर्म दिन वे डेयटोना बीच आई थीं।

मिसेज बैथ्यून एक युवा शिक्षिका थीं। वे जानती थीं कि दक्षिणी अमरीका में 1904 में भी अधिकतर छोटे कस्बों व शहरों में काले और गोरे बच्चों के स्कूल अलग-अलग थे। कुछ कस्बों में तो सिर्फ गोरे बच्चों के स्कूल थे काले बच्चों के थे ही नहीं। सो इन जगहों के काले बच्चे पढ़ने के लिए स्कूल ही नहीं जा पाते थे। यह बात मिसेज बैथ्यून को बेहद नाराज़ करती थी। उन्हें इस बारे में कुछ करने को उकसाती थी। वे चाहती थीं कि काले बच्चों के लिए अधिक स्कूल हों, यह भी कि वे अच्छे स्कूल हों।

जब मिसेज बैथ्यून छोटी थीं, वे भी ठीक उन्हीं बच्चों की तरह थीं, जिन्हें उन्होंने कुछ पल पहले रेलगाड़ी की खिड़की से देखा था। जब तक वे ग्यारह साल की नहीं हुईं वे स्कूल जाना शुरू नहीं कर सकी थीं। उनके चैदह बड़े भाई-बहन तो कभी स्कूल गए ही नहीं।

उनके अपने गृह कस्बे मेयस्विले, दक्षिण कैरोलाइना में, जहाँ वे पल-बढ़ रही थीं, काले बच्चों के लिए कोई स्कूल था ही नहीं।

****

पर यह सब बदल रहा था। मिसेज बैथ्यून भाग्यशाली रही थीं। उन्हें वह दिन याद था जब उन्होंने पहली बार सुना कि वे स्कूल जाएंगी। उनके माता-पिता मिस्टर व मिसेज मॅक्लिओड, कस्बे से इस खुशखबरी के साथ घर लौटे थे। काले बच्चों के लिए एक स्कूल खुला था, जो सिर्फ पाँच मील की दूरी पर था। यह सुन मेरी के चेहरे पर एक चौड़ी मुस्कान छा गई थी। स्कूल जा पाना एक सपने का हकीकत में बदलने जैसा था। पर मेरी स्कूल जा पाए उसके पहले उसके माता-पिता को यह तय करना था कि परिवार की खेतीबारी का काम-धंधा मेरी की मदद के बिना चल सकेगा या नहीं।

उन्होंने इस पर सोच-विचार किया और यह तय किया कि सबसे छोटी होने के कारण स्कूल के घंटों में मेरी की मदद के बिना भी काम चलाया जा सकता है। पर मेरी को अपने हिस्से के कामों को निपटाने का समय खुद निकालना होगा। साथ ही उसे हर दिन पैदल स्कूल जाना होगा। यह भी कि उसे स्कूल छोड़ने और वहाँ से घर लिवा लाने की मोहलत किसीको नहीं दी जा सकती।

सो अगले छह सालों तक मेरी मॅक्लिओड हर दिन कच्चे रास्ते पर पाँच मील पैदल चल कर अपने एक कमरे वाले स्कूल जाती-आती रहीं। मेरी स्कूल में तेज़ी से सीखने लगी, और जो कुछ वह वहाँ सीखती घर लौट अपने परिवार वालों और आस-पडोस के लोगों को सिखाती। जल्द ही मेयस्विले के वयस्क - गोरे और काले, दोनों ही - उससे अपने वे खत पढ़वाने लगे जो वे खुद नहीं पढ़ सकते थे। वह उनके खेतों में कपास की फसल का वज़न तय करने और उसकी कीमत निकालने में उनकी मदद करती। स्थानीय दुकानों में उनकी देनदारी का हिसाब जोड़ कर बताती।

तब मेरी ने उत्तरी कैरोलाइना के एक स्कूल की छात्रवृत्ति जीती, जिसमें नए शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाता था। जब घर छोड़ने का समय आया मेयस्विले के सारे बाशिन्दे उसे विदा करने आए। उन्हें मेरी पर फक्र था। मेरी ने सबकी मदद की थी, सो अब वे सब भी उसकी मदद करना चाहते थे। कुछ ने उसके लिए नए कपड़े सिले थे। कुछ ने उसके लम्बे सफर के लिए खाना तैयार किया था। सबने उसे शुभकामनाएं दीं।

मेरी ने उत्तरी कैरोलाइना में खूब मेहनत से पढ़ाई की। उसने कई विषयों पर कई-कई किताबें पढ़ीं। दुनिया के बारे में वह जितना जान सकती थी उतना जाना-सीखा। खेतीबारी, सिलाई-कढ़ाई, घर चलाना, बीमारों की तीमारदारी, बच्चों को पालने-पोसने और उन्हें पढ़ाने के बारे में खूब ज्ञान अर्जित किया। अब मेरी अपना ज्ञान दूसरों के साथ बाँटने को तैयार थी। सो वह शिक्षिका बनी।

शिक्षिका के रूप में उन्होंने सबसे पहले मेयस्विले के उसी स्कूल में पढ़ाना शुरू किया जहाँ उन्होंने खुद पढ़ाई की थी। इसके बाद वे ऑगस्टा, जॉर्जिया में एक शिक्षिका मिस लेनी की मदद करने गईं। मिस लेनी काली बालिकाओं के लिए एक स्कूल चलाती थीं। मिस लेनी के स्कूल ने ही मेरी के मन में खुद अपना स्कूल खोलने का विचार जगाया।

मिस लेनी के स्कूल में साल भर काम करने के बाद मेरी की मुलाकात एल्बर्टस बैथ्यून से हुई, जो एक शिक्षक थे। दोनों का विवाह हुआ। बैथ्यून दम्पत्ति फ्लौरिडा स्थित पलाट्का चले गए, जहाँ मिसेज बैथ्यून ने दो वर्षों तक चर्च के एक स्कूल में पढ़ाया। पर मिस लेनी जैसे स्कूल को खोलने का विचार उनको लगातार आकर्षित करता रहा। वे अपने स्कूल के लिए सही जगह की तलाश करने लगीं।

मिसेज बैथ्यून को पता चला कि फ्लौरिडा के पूर्वी तट पर रेलगाड़ी का रास्ता बनाने, उसकी पटरियाँ बिछाने का काम करने के लिए कई काले मज़दूरों को लिया गया है। अधिकतर काम डेयटोना बीच के आसपास चल रहा है। मिसेज बैथ्यून जानती थीं कि ये कामगार ज़रूर अपने परिवारों को भी साथ लाए होंगे ओर उनके बच्चों को एक स्कूल की ज़रूरत पड़ेगी। जब उनकी रेलगाड़ी डेयटोना बीच पहुँची और उन्होंने बच्चों को पटरियों के पास खेलते देखा, तो उन्हें भरोसा हो गया कि जगह का उनका चुनाव बिलकुल सही था।

****

पर मिसेज बैथ्यून ने पहले कभी अपना स्कूल तो खोला नहीं था। स्कूल के लिए इमारत कहाँ मिलेगी ? स्कूल के लिए मेज़-कुर्सियाँ और दूसरी चीज़ें वे कहाँ से जुटाएंगी ? बच्चों के माता-पिता क्या उन्हें मेरी के स्कूल भेजेंगे भी? उनके मन में ये तमाम सवाल तब कुलबुला रहे थे जब उनकी रेलगाड़ी स्टेशन पर पहुँच कर थमी थी। पर उन्हें पक्का विश्वास था कि वे अपना स्कूल शुरू करने का कोई न

कोई रास्त ज़रूर तलाश लेंगी। आखिर यही तो उनका सपना था जिसे वे हकीकत में बदल कर ही दम लेंगी।

अध्याय 2

कचरे के ढ़ेर के पास वाली पुरानी केबिन

मिसेज बैथ्यून ने डेयटोना की काली बस्ती के एक छोटे से लकड़ी के बने घर का दरवाज़ा खटखटाया। तीन लड़कियों ने दरवाज़ा खोला और एक अजनबी औरत और उसके बेटे को देख चौंक कर ठिठियाने लगीं। ये लड़कियाँ लेना, लूसिल और रूथ वॉरेन थीं। पल भर बाद ही खुद मिसेज वॉरेन भी दरवाज़े पर आ गईं। उन्होंने मिसेज बैथ्यून का स्वागत तो किया पर उनकी आँखों में दुविधा झलक रही थी। मिसेज बैथ्यून ने अपना परिचय दिया और बताया कि पलाट्का, फ्लौरिडा के पादरी रैवरेण्ड प्रैट ने मिसेज

वॉरेन का नाम व ठिकाना दिया है। ''मैं नीग्रो लड़कियों के लिए एक स्कूल खोलना चाहती हूँ,'' मिसेज बैथ्यून ने कहा। यह भी जोड़ा कि रैवरेण्ड प्रैट ने कहा था कि जब तक स्कूल शुरू नहीं हो जाता वे शायद मिसेज वॉरेन के साथ रह सकती हैं।

अपने मित्र रैवरेण्ड प्रैट का नाम सुन मिसेज वॉरेन की दुविधा एक चौड़ी मुस्कान में तब्दील हो गई। उन्होंने मिसेज बैथ्यून को स्नेह से अन्दर बुलाया और दोनों बातें करने लगीं। जल्दी ही सब तय हो गया। मिसेज वॉरेन की बेटियाँ अपना कमरा मिसेज बैथ्यून को देने को राज़ी हो गईं, ताकि एल्बर्ट और वे उसमें सो सकें।

मिसेज बैथ्यून बेहद शुक्रगुज़ार थीं। अपने सफर के बाद वे थक भी चुकी थीं, पर फिलहाल सोने-आराम करने की बात तो वे सोच भी नहीं सकती थीं। करने को इतना कुछ जो था। उन्होंने मिसेज वॉरेन को बताया कि उन्हें एक ऐसे मकान को ढूंढ़ना है जिसे स्कूल में बदला जा सके। ''क्या आप किसी ऐसे शख्स को जानती हैं जो अपनी इमारत मुझे किराए पर दे सके?'' उन्होंने मिसेज वॉरेन से पूछा।

मिसेज वॉरेन ने कुछ देर सोचा, तब बोलीं कि खाती मिस्टर विलियम की पाम स्ट्रीट में एक केबिन (लकड़ी के लट्ठों से बना मकान) है, जो शायद किराए पर मिल सकती है। मिसेज बैथ्यून ने तय किया कि वे बिना समय ज़ाया किए फौरन मिस्टर विलियम से मिलेंगी।

मिस्टर विलियम के केबिन के रास्ते पर जाते हुए मिसेज बैथ्यून ने गौर किया कि काले लोगों के मुहल्ले गोरों के मुहल्लों से कितने अलग हैं। काले मुहल्लों में पक्की सड़कें नहीं थीं। कच्ची सड़कें कीचड़-कादे से भरी थीं जिनमें गहरे गड्ढे थे। उनमें पैदल-पथ नहीं था और रोशनी के खंभे नदारद थे। इन सभी चीज़ों का बन्दोबस्त दरअसल स्थानीय कस्बाई सरकार को करना चाहिए था, पर ऐसा इसलिए नहीं किया गया था क्योंकि इन मुहल्लों के बाशिन्दे काले और गरीब थे।

मिसेज बैथ्यून को इधर-उधर कुछ साफ-सुथरे, रंग पुते घर भी दिखे। पर अधिकतर घर खस्ताहाल थे, जिनमें नल का पानी भी नहीं आता था।

डेयटोना बीच के गोरे मुहल्लों में बड़े और उम्दा घर और शानदार होटल थे। वहाँ पक्की सड़कें थीं, जहाँ रात में गैस से चलने वाली बत्तियों का उजाला था। मिसेज बैथ्यून की दिली उम्मीद थी कि किसी दिन उनके लोगों के भी उम्दा घर और मुहल्ले होंगे। पर वे यह भी जानती थीं कि सरकार काले लोगों की मदद उस तरह कतई नहीं करेगी जैसी वह गोरों की करती है। काले लोगों को यह सब खुद ही हासिल करना होगा। पर इसके लिए उन्हें अच्छी नौकरियों की ज़रूरत होगी। वे यह भी जानती थीं कि अच्छी नौकरियाँ पाने के लिए अच्छे स्कूलों की ज़रूरत होगी। उनका लक्ष्य ठीक ऐसा ही स्कूल खोलना था ताकि किसी दिन उनके

लोग भी बेहतर ज़िन्दगियाँ जी सकें।

वे यह सब सोचते आगे बढ़ती गईं। उन्होंने मिस्टर विलियम को अपने पुराने केबिन के बरामदे में बैठा पाया।

"हलो," वे बोलीं। "मैं मिसेज बैथ्यून हूँ।" उन्होंने मिस्टर विलियम को बताया कि उन्हें मिसेज वॉरेन से पता चला है कि वे शायद अपना केबिन किराए पर दे सकते हैं। और तब उन्होंने किराया जानना चाहा।

"मैं महीने के ग्यारह डॉलर पर आपको यह जगह किराए पर दे सकता हूँ," मिस्टर विलियम बोले।

मिसेज बैथ्यून ने अपना बटुआ खोला और अन्दर झांकने लगीं। पर सच यह था कि उन्हें ऐसा करने की ज़रूरत थी ही नहीं। उन्हें पता था कि उनके पास कितने पैसे हैं। उनके पास थे कुल एक डॉलर और पचास सेंट, इससे अधिक एक दमड़ी तक न थी। पर वे नहीं चाहती थीं कि मिस्टर विलियम को यह पता चले कि उनके पास कितने कम पैसे हैं। अपने बटुए को कुछ देर खंगालने के बाद उन्होंने दस सेंट वाले पाँच सिक्के मिस्टर विलियम को थमाए।

"शुक्रिया विलियम साहब," वे बोलीं। उन्होंने समझाया कि यह किराए की पेशगी भर है। यह भी बताया कि महीने के अंत तक वे बकाया 10 डॉलर व 50 सेंट चुका देंगी।

मिस्टर विलियम ने कुछ कहने के लिए मुँह खोला। वे मोलतोल पूरा नहीं कर पाए थे। पर एक भी शब्द उनके मुँह से निकलता उसके पहले ही मिसेज बैथ्यून ने दरवाज़ा खोला और केबिन में घुस गईं। उन्होंने मिस्टर विलियम से सौदा तय जो कर लिया था। उनके हिसाब से केबिन अब उनका था।

अब यह देखने का समय था कि केबिन में किस तरह का काम करना होगा। उन्हें दिखाई दे रहा था कि पुताई पूरी जगह ज़रूरी होगी। उन्होंने नीचे के तल्ले में चार और ऊपर तीन कमरे गिने। केबिन में अलाव की जगह थी, पर उन्हें चूल्हा (स्टोव) लाना होगा। खिड़कियों की हालत काफी ठीक थी। पर हर जगह धूल-मिट्टी पसरी थी और जाले लटक रहे थे। पर वे उत्तेजित थीं। उन्हें भरोसा था कि वे जल्द ही केबिन को चुस्त-दुरुस्त कर डालेंगी।

वे बाहर बरामदे पर लौटीं, और सीढ़ियों के फट्टों को देखा। सोचा, इनकी भी तो मरम्मत करवानी होगी। तब बिना और रुके उन्होंने मिस्टर विलियम से विदा ली और तेज़ी से लौट गईं।

मिसेज बैथ्यून के पास अब एक केबिन था, पर वह स्कूल की शक्ल अख्तियार करे उसके पहले उन्हें बहुत कुछ करना था। पर मेरी इस बात से चिन्तित नहीं हुईं। अपने सपने पर उन्हें पक्का विश्वास था। और थी मन में अटूट आस्था। वे जानती थीं कि कोई न कोई रास्ता वे तलाश ही लेंगी।

मिसेज बैथ्यून ने कतई समय बरबाद नहीं किया। वे अपने मुहल्ले के घरों में जाने लगीं, और लोगों को अपने स्कूल के बारे में बताने लगीं। इतवार के दिन वे गिरजों में जातीं और वहाँ लोगों से बात करतीं। अगर कोई दरवाज़ा नज़र आता तो वे उसे ज़रूर खटखटातीं। सड़क किनारे दो लोग बतियाते दिखते तो वे उनके पास जातीं। शर्माती वे कतई नहीं थीं।

‘‘मेरा स्कूल,’’ वे लोगों को बतातीं, ‘‘लड़कियों के स्कूल की तरह शुरू होगा।’’ उन्हें लगता था कि बेहतर काम तलाशने में लड़कों की बनिस्बत लड़कियों को ज़्यादा मदद की ज़रूरत है। लड़के तो खेती के कौशल सीख खेतीबारी का काम, या मज़दूरों की तरह रेलरोड बनाने काम तलाश सकते थे। बेशक ये कोई बहुत अच्छे काम नहीं थे, पर फिर भी वे लड़कियों से अधिक मेहनताना कमा सकते थे। जबकि शिक्षा या विशेष प्रशिक्षण के बिना लड़कियाँ उतना भी नहीं कमा पाती थीं, जितना लड़के अकुशल मज़दूरी कर कमा लेते थे।

"यह एकदम नई तरह का स्कूल होगा," वे कहतीं। "मैं अपनी लड़कियों को हस्त-कौशल और घर-गृहस्थी चलाना सिखाऊँगी। मैं उन्हें आजीविका कमाना सिखाऊँगी। उनके दिमाग, हाथ और दिल सब प्रशिक्षित होंगे। उनके दिमाग सोचना, हाथ काम करना, और दिल आस्था-विश्वास बनाए रखना सीखेंगे।" लोग मिसेज बैथ्यून जो कहतीं उसे ध्यान से सुनते। जो वे कहतीं वह उन्हें अच्छा लगता।

जिन लोगों से मिसेज बैथ्यून बात करतीं उनके पास या तो बेहद कम पैसे होते या फिर होते ही नहीं। पर जब वे अपने स्कूल के लिए मदद मांगतीं, वे भरसक मदद करते। वे अपनी रसोई या बगीचे से भोजन या सामग्री देते। वे मछली या मुर्गी का डिनर (रात का खाना) बना कर बेचते और जो पैसे मिलते उसे मिसेज बैथ्यून को स्कूल बनाने के लिए दे देते।

जब मिसेज बैथ्यून बाल-बच्चों वाले लोगों से मिलतीं, वे बच्चियों को स्कूल भेजने को कहतीं। वे बतातीं कि वे सप्ताह में सिर्फ पचास सेंट ही लेने वाली हैं। पर अगर वे लोग पचास सेंट भी देने की स्थिति में न होते तो वे फिर भी लड़कियों को भेजने का आग्रह करतीं। उन्हें भरोसा था कि स्कूल के खर्चों की व्यवस्था वे किसी न किसी तरह कर ही लेंगी।

वे गोरों के मुहल्ले में भी घूमीं। वहाँ भी वे घंटी बजातीं और जो भी उनकी बात सुनने को तैयार होता उससे बात करतीं। वे गोरों के गिरजों में, उनके क्लबों और बासों (लॉज) में जातीं। वे जहाँ भी जातीं पैसे, खाद्य सामग्री, पुराना फर्नीचर और कपड़े मांगतीं - ऐसा कुछ भी, जो उनके स्कूल की मदद कर सके। कुछ लोग मदद करते, पर दूसरे उनकी बात तक सुनने से इन्कार कर देते। कुछ तो उनका अपमान भी करते। पर मिसेज बैथ्यून हमेशा बेहद शाइस्तगी बरततीं। "अपना समय देने के लिए शुक्रिया," वे शांत भाव से कहतीं, और पलट कर लौट जातीं।

वे दिनों-दिन लोगों को अपने स्कूल के बारे में बताती रहीं। और दिनों-दिन स्कूल केबिन के पास वाले और बड़े होटलों के पिछवाड़े में बने कचरे के ढ़ेरों के पास जातीं रहीं। वे लोगों से खाली गत्ते के डब्बे और लकड़ी के खोखे मांगती। कचरे के ढ़ेरों से वे लकड़ी के टुकड़े, टूटी कुर्सियाँ, फटे-पुराने कपड़े और टूटी तश्तरियाँ बटोर लातीं।

इन सारी चीज़ों को वे ढोकर केबिन के पिछवाड़े में ले आतीं और उनकी मरम्मत करतीं। गत्ते के डब्बे उनकी छात्राओं की मेज़ें बनीं। संतरों के खोखे उनकी कुर्सियाँ। पैकिंग करने वाला एक पुराना खोखा उनकी मेज़ बना। एक पीपे को उलट कर उन्होंने अपनी कुर्सी बना डाली। उनके पड़ोसियों ने फर्श को रगड़ कर साफ करने, खिड़कियों को धो कर चमकाने और पूरे केबिन को अन्दर-बाहर से रंगने में उनकी मदद की।

चंद सप्ताहों में केबिन स्कूल जैसा लगने लगा। इधर स्कूल अब अपनी शक्ल अख्तियार करने लगा था, पर उधर मिसेज बैथ्यून के सामने नई समस्याएं आ खड़ी हुई थीं। उनके पास जितने पैसे इकट्ठे हो सके थे वे सिर्फ पहले महीने के किराए के लिए काफी थे। पर उन्हें स्कूल चला पाने के लिए खाने-पीने का सामान और स्कूल सामग्रियाँ भी तो खरीदनी थीं। उनके पास बचा था सिर्फ एक डॉलर। वे क्या करें उन्हें ठीक से मालूम न था। पर वे इतना ज़रूर जानती थीं कि कोई न कोई रास्ता वे तलाश ही लेंगी।

अध्याय 3

स्कूल के लिए पाई व गीत

मिसेज बैथ्यून ने रेलरोड पर खटने वाले मज़दूरों के बारे में सोचा। उन्होंने डेयटोना के अमीर बाशिन्दों और आलीशान होटलों में ठहरने वाले मुसाफिरों के बारे में सोचा। स्कूल चलाने के लिए और पैसा कैसे जुटाया जा सकता है, इस बारे में सोचा। तब उनके दिमाग में एक विचार कौंधा।

पाई! वे शकरकन्द की भरावन वाले मीठे पाई (अलाव में सिंका पकवान) बनाएंगी और लोगों को बेचेंगी। वे सोचने लगीं कि उन्हें इसके लिए किन-किन चीज़ों की ज़रूरत होगी: पाई के सांचे, शकरकन्द उबालने के लिए एक बड़ा भगोना, मैदा, चर्बी, अण्डे, शकरकन्दी और चीनी। पर इन सबकी कीमत तो एक डॉलर से कहीं ज़्यादा होगी। पर जो खरीदा नहीं जा सकता उसे वे उधार ले सकती हैं। रास्ता तो निकाला ही जा सकता है।

मिसेज वॉरेन ने उन्हें अपना मैदा और चर्बी उधार दे दी। तब मिसेज बैथ्यून किराने की दुकान गईं और अपना आखिरी डॉलर उन्होंने पाई के सांचे, एक भगोना, अण्डे, चीनी और शकरकन्दी खरीदने में खर्च दिया। ''मेहरबानी कर सब चीज़ों को अलग-अलग कागज़ में लपेटिएगा,'' उन्होंने किरानची से कहा। जब स्कूल खुल जाएगा उनकी छात्राएं इन कागज़ों का इस्तमाल लिखने के लिए जो कर सकती थीं।

स्कूल के लिए कुछ और पैसे कमाने का रास्ता मिसेज बैथ्यून को मिल गया था। वे पाई बनाने लगीं और वे अच्छे बिके भी। उन्हें जो अतिरिक्त पैसों की दरकार थी अब उनके पास थे।

4 अक्तूबर 1904 के दिन मिसेज बैथ्यून केबिन के दरवाज़े के पास खड़ी थीं, जो अब जितना संभव था उतना साफ-सुथरा था। बाहर बरामदे पर खड़ी थीं पाँच लड़कियाँ - एनी, सेलैस्टे, लेना, लुसिल और रूथ। उनकी उम्र आठ से बारह वर्ष के बीच थी। वे स्कूल में कदम रखने का इन्तज़ार कर रही थीं। ये सभी गरीब परिवारों की बच्चियाँ थीं। उनके पैरों में जूते नहीं थे, उनकी पोशाकों पर तमाम पैबन्द लगे थे। पर वे सब स्कूल जाने की बात से बेहद खुश थीं।

मिसेज बैथ्यून ने स्कूल शुरू होने का संकेत देने के लिए एक छोटी घंटी बजाई और तब बारी-बारी से हरेक लड़की का नाम पुकारा। जैसे-जैसे वे दरवाज़े से अंदर आतीं मिसेज बैथ्यून कहतीं, "सुप्रभात! मैं मिसेज बैथ्यून हूँ। मेहरबानी से अंदर आओ। हम तुम्हारा इन्तज़ार कर रहे थे। मुझे उम्मीद है कि तुम हमारे साथ खुश रहोगी।"

जब सारी लड़कियाँ गत्ते के डब्बों से बनी मेज़ों के पास आ गईं, मिसेज बैथ्यून ने एक सबसे एक प्रार्थना बुलवाई। और तब सभी लड़कियों और एल्बर्ट से आस्था से भरा गीत गवाया।

मिसेज बैथ्यून की खोखे से बनी मेज़ के गिर्द एक रंग-बिरंगा कपड़ा लिपटा था। वे मेज़ के पीछे पीपे से बनी अपनी कुर्सी पर बैठीं। और बच्चों को पढ़ाने लगीं। पेन्सिलों के बदले वे जली हुई टहनियाँ काम में लेते। स्याही की जगह वे बेरियों से निकाले रस का इस्तेमाल करते। पेन का काम बत्तख और मुर्गियों के पंख करते। उनके कागज़ वे थे जिनमें मिसेज बैथ्यून किराने का सामान बंधवा कर लाई थीं। किताबें उनके पास नहीं थीं। इस सब के बावजूद बच्चियाँ सीखने लगीं।

उनकी छात्राओं ने ऐसे कौशल सीखे जो बड़े होने पर उन्हें रोज़गार दिला सकें और जिनका उपयोग वे खुद की देखभाल करने में कर सकें।

पढ़ना-लिखना और गणित सीखने के अलावा उन्होंने कविताएं याद करना और उनका सस्वर पाठ करना सीखा, चित्र आंकना सीखा। केवल इतना ही नहीं, उन्होंने साथ ही सीखा खाना पकाना, खुद साफ रहना और अपनी देखभाल करना। उन्होंने सीना-पिरोना, झाड़ू बनाना और दरियाँ बुनना सीखा। कचरे के ढ़ेर से उठाई गई टूटी तश्तरियों और फर्नीचर की मरम्मत करना सीखा। मिसेज बैथ्यून के स्कूल में उन्होंने तमाम ऐसी चीज़ें सीखीं जो वे कहीं और सीख नहीं सकती थीं।

अब और परिवार भी अपनी बेटियों को मिसेज बैथ्यून के स्कूल में भेजने लगे। पर केवल कुछ ही परिवार ऐसे थे जो हर सप्ताह फीस भर सकते थे। मिसेज बैथ्यून ने और पाई बनाए और बेचे, अब उनकी छात्राएं भी इस काम में उनकी मदद करने लगीं। पर जैसे-जैसे स्कूल बड़ा होने लगा, उसके खर्चे भी बढ़ने लगे। शकरकन्द की पाई से उतना पैसा नहीं जुट पा रहा था जितने की ज़रूरत स्कूल चलाने की सामग्रियों के लिए चाहिए था।

मिसेज बैथ्यून पैसा उगाहने का कोई दूसरा तरीका सोचने लगीं। उन्हें याद आया कि उन्हें गाना कितना पसंद था। जब वे मिस लेनी के स्कूल में पढ़ाती थीं वे कोरस (गायकों का समूह) में गाया करती थीं। वह कोरस गिरजों में और लोगों के घरों में जा गाया करता था। लोग उन्हें सुनने के लिए पैसे दिया करते थे

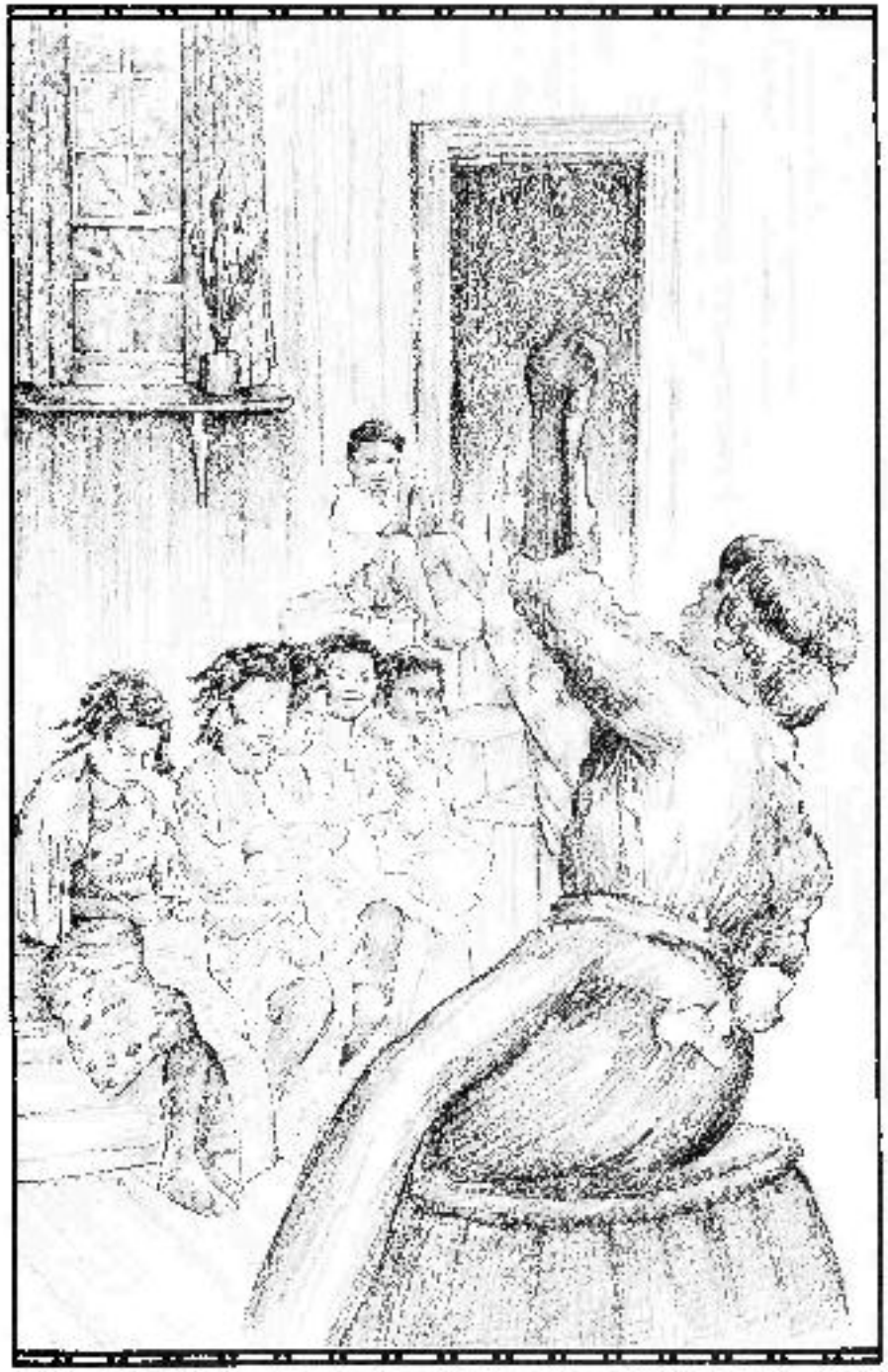

जो स्कूल चलाने में मिस लेनी की मदद करता था। डेयटोना बीच में भी एक अच्छा कोरस खप सकता है, मिसेज बैथ्यून ने सोचा। कोरस के ज़रिए कमाई गई राशि का उपयोग उनका स्कूल कर सकता है।

अगले ही दिन मिसेज बैथ्यून ने अपनी छात्राओं से कहा कि वे अब एक कोरस शुरू करने वाले हैं। उन्होंने अपनी छात्राओं को वे सारे गीत सिखाए जो वे जानती थीं। इनमें कुछ ऐसे भी गीत थे जो उन्होंने अपने बचपन में अपनी परदादी सोफिया से सीखे थे। परदादी सोफिया पश्चिमी अफ्रीका के एक कबीले की मुखिया की पोती थीं।

मिसेज बैथ्यून अब अपने कोरस को डेयटोना के गिरजों, होटलों और क्लबों में ले जाने लगीं। गाना शुरू करने के पहले वे श्रोताओं को अपने स्कूल के बारे में बतातीं। कार्यक्रम खत्म होने पर वे एक पुराना टोप लोगों के बीच घुमातीं, और लोग स्कूल की मदद के लिए चन्द सिक्के उसमें ज़रूर डालते।

अब और भी माता-पिता अपनी बच्चियों को मिसेज बैथ्यून के स्कूल में भेजने लगे। 1906 तक उसमें तकरीबन 250 छात्राएं हो चुकी थीं। मिसेज बैथ्यून किसी भी बच्ची को वापस नहीं लौटा पाती थीं। केबिन की कक्षाओं में काफी भीड रहने लगी। ज़ाहिर था कि स्कूल को और अधिक धन और स्थान की ज़रूरत थी।

मिसेज बैथ्यून को यह जगह केबिन के पीछे बने एक खलिहान में मिली। मिस्टर विलियम अपने खाली पड़े खलिहान को किराए पर उठा बेहद खुश थे। पर काम में ले पाने के पहले उसकी भी मरम्मत ज़रूरी थी। एक बार फिर मिसेज बैथ्यून के पडौसियों और उनकी छात्राओं ने जगह को दुरुस्त करने में मदद की। मिसेज बैथ्यून ने फिर से रास्ता ढूंढ लिया था।

अध्याय 4

दलदली ज़मीन बना स्कूल परिसर

मिसेज बैथ्यून इतना व्यस्त रही थीं कि उन्हें अपने उस सपने के बारे में साचने तक की फुर्सत नहीं थी जो धीरे-धीरे हकीकत में बदल रहा था। पर एक दिन उन्होंने केबिन और खलिहान को ध्यान से देखा। तब छात्राओं को कक्षाओं में आते-जाते देखा, और वे फक्र से मुस्कुराईं। उन्होंने काली बालिकाओं के लिए स्कूल खोल लिया था और वह बाकायदा चल भी रहा था। इसके बावजूद हर महीने का खर्च चुकाने के लिए उनका संघर्ष जारी था।

हर महीने मिस्टर विलियम को केबिन और खलिहान का किराया देना पड़ता है। पर अगर वे ज़मीन का एक टुकड़ा खरीद लें तो किराया नहीं देना पड़ेगा। विचार अच्छा था। वे उस ज़मीन पर स्कूल की इमारत बनवा सकती थीं - ठीक वैसी जैसी वे चाहती थीं।

उन्होंने डेयटोना में ज़मीन तलाशनी शुरू कर दी। केबिन के करीब ही उन्हें ज़मीन का एक बड़ा-सा टुकड़ा मिल गया जो बिकाऊ था। ज़मीन बलूत के ऊँचे पेड़ों से घिरी थी। पर बलूत की विशाल काई से लदी शाखाओं के नीचे की धरती दलदली थी, खरपतवार और कूड़े-कचरे से भरी। कीमत थी 250 डॉलर! पर मिसेज बैथ्यून ने कीमत पर कोई टिप्पणी नहीं की। बल्की उन्होंने बड़े ध्यान से उस दलदली धरती को देखा।

देखते ही देखते दलदल उनकी आँखों से ओझल होने लगा। उसकी जगह था सुन्दर हरा-भरा मैदान, और विशाल बलूत के पेड़ों की छाया में थीं रंग-बिरंगे फूलों की क्यारियाँ। और बीचोंबीच खड़ी थी लाल ईंटों से बनी एक मज़बूत इमारत - उनका नया स्कूल। मिसेज बैथ्यून मुस्कुराईं। उन्होंने देख लिया था कि वह बेनूर दलदली ज़मीन दरअसल क्या बन सकती है। और इस सबको सच्चाई में बदलने का एक उपाय भी उन्हें सूझ गया था।

वे स्कूल लौटीं और उन्होंने अपनी छात्राओं के माता-पिता, शिक्षिकाओं और बच्चियों से बात की। उन्होंने कहा कि वे नए स्कूल के लिए पैसे जमा करने के वास्ते एक आइसक्रीम पार्टी करेंगी। डेयटोना के हरेक बाशिन्दे को दावत का न्यौता दिया जाएगा।

अगले कई दिनों तक मिसेज बैथ्यून, छात्राएं, शिक्षिकाएं और कई माता-पिता ने डट कर मेहनत की। उन्होंने भारी मात्रा में आइसक्रीम बनाई और अलाव में सैकड़ों छोटे पाई पकाए। दावत वाले दिन समूचे डेयटोना से लोग आए। लोगों ने पाई के एक टुकड़े या आइसक्रीम के दो गोलों के लिए एक पैनी (1 सेंट) की कीमत अदा की।

दावत खत्म होने पर मिसेज बैथ्यून ने सारे सिक्के इकट्ठा कर अपने रूमाल में बांधे। और फौरन मिस्टर किन्सी के पास गईं, जो उस दलदली ज़मीन के मालिक थे।

"पेशगी के नाम पर आपको कितने पैसे चाहिए ?" उन्होंने पूछा।

"आपके पास कितने हैं ?" मिस्टर किन्सी ने जानना चाहा।

मिसेज बैथ्यून ने रूमाल खोला, पैनी (1 सेंट), निकल (5 सेंट) और डाइम (10 सेंट) के सिक्कों की शक्ल में 5 डॉलर मेज़ पर खनखनाते हुए आ गिरे।

मिस्टर किन्सी ने पल भर सिक्कों को देखा। "क्या बस इतनी ही रकम है आपके पास ?" उन्होंने अपनी भौं चढ़ाते पूछा।

"आज तो इतने ही हैं, पर मैं बकाया पैसे भी ले आऊँगी," मिसेज बैथ्यून ने पूरे आत्मविश्वास से कहा। "मुझे कुछ समय दीजिए, मैं बाकी राशि भी ले आऊँगी।"

मिस्टर किन्सी ने कुछ पल इस बारे में सोचा, तब ध्यान से मिसेज बैथ्यून को देखा। उनके चेहरे पर एक मुस्कान पसर गई। "ठीक है," वे बोले, "आपका चेहरा ईमानदार नज़र आता है। लगता है कि आप बाकी पैसे ले ही आएंगी।"

मिस्टर किन्सी और कुछ कहते उसके पहले ही मिसेज बैथ्यून ने उनका शुक्रिया अदा किया और वहाँ से चल दीं। उसी दोपहर अपनी छात्राओं और कई वयस्क मददगारों के साथ मिलकर मिसेज बैथ्यून ने ज़मीन से खरपतवार और कूड़ा-कचरा हटाने का काम शुरू कर दिया।

रेलरोड बनाने का काम करने वाले कुछ मज़दूरों ने दलदली ज़मीन से पानी हटाने में मदद की। कुछ ही महीनों में ज़मीन का वह टुकड़ा पूरी तरह सूख कर तैयार हो गया कि उस पर इमारत बांधी जा सके। पर मिसेज बैथ्यून वह इमारत भला कैसे बनवा सकेंगी ? उसके लिए पैसे कहाँ से आएंगे ? मज़दूर कहाँ मिलेंगे ?

अध्याय 5

आखिरकार एक असली स्कूल

केबिन में चलने वाले अपने पुराने स्कूल भवन में मिसेज बैथ्यून शाम के समय काले समुदाय के स्त्री-पुरुषों के लिए कक्षाएं चलाने लगीं। पढ़ने आने वाले पुरुषों में कुछ रेलरोड पर काम करते थे। दूसरे नलका मिस्त्री और चुनाई मिस्त्री थे। बेशक ऐसे कुशल कारीगर स्कूल की इमारत बनाने में मदद कर सकते हैं, मिसेज बैथ्यून ने सोचा। बात उनसे मदद मांगने भर की है। और वे हिचकी नहीं।

ये कामगार उनकी मदद करने को बेताब थे; पर वे उसे पूरा नहीं बना सकते थे। सप्ताह के अधिकतर दिन वे सुबह से अंधेरा घिर आने तक अपना काम किया करते थे। रोशनी रहने तक स्कूल बनाने का काम करने के लिए समय

निकालना उनके लिए नामुमकिन था। मिसेज बैथ्यून को पूरे दिन काम करने वाले निर्माण मज़दूरों की ज़रूरत थी। फिर भी उनके स्वयंसेवक मज़दूर साथियों ने काम की शुरुआत कर दी। धीमे-धीमे उनके रात्रिशाला के वयस्क छात्रों ने ज़मीन की खुदाई की, ईटें चुनी। लकड़ी काटी और तराशी, सही जगहों पर पाइप लगाए। स्कूल की दीवारें ऊपर उठने लगीं।

मिसेज बैथ्यून और उनकी छात्राएं कोरस के रूप में गा कर पैसे इकट्ठा करती रहीं। उन्होंने और आइसक्रीम और पाई बनाए और बेचे। पर फिर भी रेत, ईटें, काँच, पाइप और इमारत बनाने के लिए दूसरी सामग्रियों के लिए पैसे नाकाफी थे। और उन्हें दिन भर काम करने वाले मज़दूर चाहिए थे जिनको मेहनताना देने के लिए भी पैसे नहीं थे।

मिसेज बैथ्यून किसी ऐसे उपाय के बारे में सोचने लगीं जिससे और अधिक पैसे इकट्ठा किए जा सकें। डेयटोना में कुछ बेहद अमीर गोरे लोग भी थे जिनके दरवाज़ों की घंटियाँ उन्होंने अब तक नहीं बजाई थीं। ये दरअसल उत्तरी अमरीका के लोग थे जिनके डेयटोना बीच में गर्मियों के घर थे।

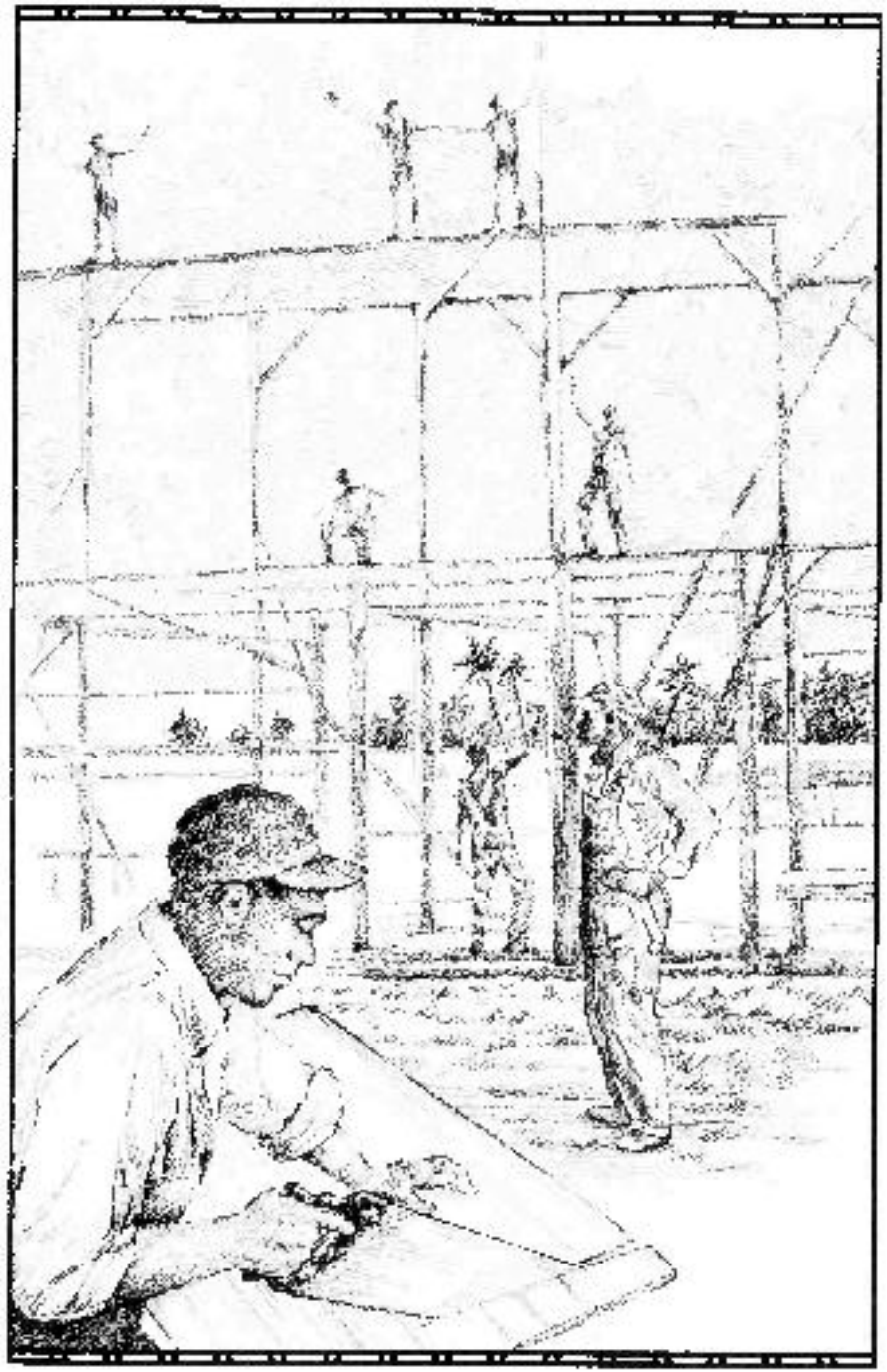

वे साचने लगीं कि शायद उनमें से कुछ स्कूल के न्यासी बनना चाहें। ऐसे लोग स्कूल चलाने में उनकी मदद कर सकेंगे। एक सुहानी दोपहर वे अपनी साइकिल से मिस्टर गैम्बल के आलीशान बंगले जा पहुँचीं।

"क्या आप वही महिला हैं जो यहाँ एक स्कूल खोलने की चेष्टा कर रही है ?" मिस्टर गैम्बल ने दरवाज़ पर खड़ी मिसेज बैथ्यून से पूछा। मिसेज बैथ्यून ने मिस्टर गैम्बल को अपने स्कूल के बारे में बहुत कुछ बताया। तब उन्हें किसी भी दिन स्कूल आने का न्यौता दिया। उन्होंने पैसों का कोई ज़िक्र नहीं किया। वह बात तो बाद में भी की जा सकती थी। पहले उन्हें आ कर सब कुछ देखने तो दो, उन्होंने मन ही मन सोचा।

चंद रोज़ बाद एक सुबह मिस्टर गैम्बल केबिन आ पहुँचे। उस वक्त सब पाई बनाने में व्यस्त थे। मिसेज बैथ्यून ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया और उन्हें केबिन और खलिहान की कक्षाएं दिखाने ले गईं। मिस्टर गैम्बल ने गौर से पुराने खोखों और गत्तों के डब्बों को देखा, जिनका बच्चे मेजों और कुर्सियों की तरह इस्तमाल करते थे। उन्होंने जली हुई टहनियों को देखा, जो पेन्सिल का काम करती थीं। उन्होंने नई इमारत की अधबनी दीवारों को देखा।

मिसेज बैथ्यून का स्कूल उन्हें ऐसे किसी भी स्कूल की तरह नहीं लगा जिसे मिस्टर गैम्बल ने पहले कभी देखा हो। वे कुछ परेशान और भ्रमित नज़र आए।

"वह स्कूल भला कहाँ है, जिसके बारे में आपने मुझे बताया था ?" उन्होंने पूछा।

मिसेज बैथ्यून की आँखें झिलमिला उठीं, वे मुस्कुराईं, उन्होंने अपने हाथ छाती के गिर्द बांधे। ''मेरे दिलो-दिमाग में, मेरी आत्मा में,'' उन्होंने फक्र से कहते हुए एक हाथ अपने दिल पर रखा। ''मेरी आपसे गुज़ारिश है कि आप एक सपने के न्यासी (ट्रस्टी) बनें।'' वे आगे बोलीं ''उस अरमान के न्यासी, जो मेरे दिल में मेरे लोगों के लिए बसे हैं।''

मिस्टर गैम्बल ने मिसेज बैथ्यून की आँखों में उम्मीद चमकती देखी। उन्होंने उनके मज़बूत फौलादी इरादे को देखा। वे समझ गए कि वे हर हाल में अपना स्कूल बना कर ही दम लेंगी।

सो मिस्टर बैथ्यून ने स्कूल का न्यासी बनना स्वीकार लिया। वे इस बात से भी सहमत हो गए कि वे मिसेज बैथ्यून और अन्य स्त्री-पुरुषों के साथ मिलकर स्कूल के बारे में फैसले करेंगे। मिलजुल कर वे सुनिश्चित करेंगे कि स्कूल की नई इमारत बने। और यह भी कि डेयटोना के काले बच्चों को शिक्षित कर पाने के लिए स्कूल के पास पर्याप्त राशि हो।

तब मिस्टर गैम्बल ने 150 डॉलर का चैक बनाया और मिसेज बैथ्यून को थमाया। जब मिसेज बैथ्यून ने चैक की राशि देखी वे खुशी से मुस्कुराईं और गैम्बल साहब से हाथ मिलाया। यह एक अच्छी साझेदारी की शुरुआत थी।

अक्तूबर 1907 तक निर्माण मज़दूरों ने स्कूल की चार मंज़िलों वाली इमारत के छत डाल दी थी। बेशक इमारत के अंदरूनी हिस्से में बहुत सा काम अब भी बाकी था। फर्श बिलकुल नंगा था, कई खिड़कियाँ भी लग नहीं पाई थीं। पर मिसेज बैथ्यून ने तय कर लिया कि वे लड़कियों को नए स्कूल भवन में ले आएंगी। सो अब कक्षाएं वहीं शुरू हो गईं।

उन्होंने अपने नए स्कूल भवन का नाम रखा 'फेथ हॉल' यानी आस्था भवन। भवन के मुख्य द्वार के बाहर उन्होंने एक तख्ती लगाई, जिसकी इबारत थी 'एन्टर टु लर्न' (ज्ञानार्थ प्रवेश)। और द्वार के अंदर वाले हिस्से पर जो तख्ती थी उस पर लिखा था 'डिपार्ट टु सर्व' (सेवार्थ प्रस्थान)।

मिसेज बैथ्यून चाहती थीं कि उनकी छात्राएं खूब मेहनत से पढ़ें-लिखें और जो कुछ सीखें उसका उपयोग दूसरों की मदद के लिए करें। ठीक यही तो उन्होंने खुद भी किया था। तमाम लोगों की मदद से - अमीर और गरीब, काले और गोरे - उन्होंने अपने समुदाय की सेवा के लिए एक स्कूल बना ही डाला था। अपने जीवन में काफी बाद में उन्होंने कहा, ''अधिकतर लोग सोचते हैं कि मैं बस एक सपने देखने वाली इन्सान हूँ...पर दरअसल सपनों के सहारे कई चीज़ें हकीकत बन सकती हैं।''

उपसंहार

1914 में, यानी स्कूल खुलने के महज दस सालों में ही मिसेज बैथ्यून का स्कूल एक पूर्णकालिक हाई स्कूल बन चुका था। उस वक्त समूचे फ्लौरिडा राज्य में काले बच्चों के लिए बस एक ही और हाई स्कूल था।

स्कूल की सड़क के दूसरी ओर मिसेज बैथ्यून ने और ज़मीन खरीदी और उसमें खेती शुरू की। उनकी छात्राएं खेतीबारी के काम और पशुओं की देखभाल भी करतीं। अपने खेतों में जो कुछ उगता उसे वे सब खाते और बाकी बेच कर स्कूल के लिए पैसे इकट्ठा करते। मिसेज बैथ्यून चाहती थीं कि उनका स्कूल भी आत्मनिर्भर बने, ठीक उनकी छात्राओं की तरह।

इस स्कूल से निकलने वाली युवतियाँ खाना पकाने, तीमारदारी करने, घर-गृहस्थी चलाने और शिक्षण में प्रशिक्षित होती थीं। वे कमाने के लिए नौकरियाँ पा सकती थीं, साथ ही सीखने में दूसरों की मदद भी कर सकती थीं। कुछ बाद में लड़कों के एक स्कूल के साथ मिलकर काले लड़कों के लिए भी एक स्कूल शुरू किया गया - जो बैथ्यून-कुकमैन कॉलेज बना। मिसेज बैथ्यून कॉलेज की प्रथम अध्यक्ष बनीं।

मिसेज बैथ्यून की मृत्यु 1955 में हुई। पर उनके द्वारा शुरू किया गया स्कूल आज भी मौजूद है। फ्लौरिडा की समृद्ध भूमि पर बैथ्यून-कुकमैन कॉलेज की कई इमारतें कई एकड़ ज़मीन पर बनी हुई हैं। वहाँ हर साल तकरीबन 2300 युवक-युवतियाँ पढ़ने के लिए आते हैं।

अनुकथा

जिस वक्त मेरी मॅक्लिओड बैथ्यून ने अपने स्कूल को गढ़ना शुरू किया था, वे एक जानीमानी हस्ती नहीं थी। खबरनवीस और इतिहासकार उनके आगे-पीछे नहीं चला करते थे कि वे जो कुछ कहें या करें उसे फौरन दर्ज कर लें। उन्हें ख्याति तो तब मिली जब वे अपना स्कूल स्थापित कर चुकीं और अफ्रीकी-अमरीकी समुदाय के अधिकारों की सशक्त पैरोकार बनीं।

उनके जीवन की गाथा को गढ़ने-सुनाने के लिए हमें अनेक ऐसी जीवनियों और संस्मरणों का सहारा लेना पड़ा जो मिसेज बैथ्यून के काम के आरंभिक दिनों के कई सालों बाद लिखी गई थीं। इस पुस्तक में जिन शब्दों, विचारों व कृत्यों का वर्णन किया गया है वे बाद में रची गई इन कृतियों पर आधारित हैं। जिन वार्तालापों को उद्धरण चिन्हों के साथ पेश किया गया है, वे इन्हीं स्त्रोतों से लिए गए हैं।

टिप्पणियाँ

पेज 3: संयुक्त राज्य अमरीका के कई दक्षिणी राज्यों में कुछ कानूनों को 'जिम क्रो कानून' कहा जाता था। इन कानूनों के अनुसार गोरे और अफ्रीकी-अमरीकी लोग साझे सार्वजनिक स्थानों या सुविधाओं का उपयोग नहीं कर सकते थे, जैसे पार्क, स्कूल, पीने के पानी के नल, रेल के डब्बे, यहाँ तक कि टेलिफोन बूथ भी। ये कानून 1880 से लेकर 1960 तक प्रभावी रहे।

पेज 3-4: अमरीका के दक्षिणी राज्यों में काले बच्चों के लिए कई आरंभिक स्कूल थे। पर उनमें से अधिकांश में स्कूली सामग्रियों के लिए वित्त की कमी होती थी, और वे साल में केवल तीन-चार महीनों के लिए ही खुला करते थे। 1882 में दक्षिणी कैरोलाइना के आधे ज़िलों में काले बच्चों के लिए स्कूल थे। पर ये स्कूल भी साल में केवल चार महीनों के लिए चलते थे। मिसेज बैथ्यून का अपना मूल कस्बा, मेयस्विले, दक्षिण कैरोलाइना के उन कस्बों/शहरों में था जिसमें 1886 तक काले बच्चों के लिए कोई स्कूल नहीं था।

पेज 6: काले बच्चों के लिए एक स्कूल खोलने को लेकर मिस्टर बैथ्यून अपनी पत्नी जितने उत्साहित नहीं थे। इसके बावजूद उन्होंने मिसेज बैथ्यून को डेयटोना जा अपने सपने को साकार करने को प्रोत्साहित किया। जब स्कूल धीमे-धीमे पनपने लगा, मिस्टर बैथ्यून को अहसास हुआ कि मिसेज बैथ्यून अपना जीवन दूसरों की मदद को समर्पित करने को आमादा हैं। उन्हें लगा कि मेरी के पास एक पत्नी और माँ बनने का कोई समय नहीं बचेगा। तब वे अकेले ही दक्षिणी कैरोलाइना लौट गए, जहाँ 1919 में उनकी मृत्यु हुई।

पेज 11: स्थानीय व राज्य सरकारें अफ्रीकी-अमरीकियों की मदद इसलिए नहीं करती थीं क्योंकि कई समुदायों व राज्यों में कालों को मत देने की अनुमति ही नहीं थी। खास तौर से दक्षिण के राज्यों में खास नियम और कर लागू थे जो कालों को मत देने से रोकते थे। (इस समय कोई भी महिला, चाहे वह गोरी हो या काली, मत नहीं दे सकती थी।)

नियम यह कहता था कि मत दे पाने के लिए एक पुरुष को एक कठिन पठन व लेखन परीक्षा में उत्तीर्ण होना होगा। यह भी सिद्ध करना होगा कि वह सम्पत्ति का मालिक है, और कर देता है। ज़ाहिर है कि यह कानून कई गरीब गोरों को भी मत देने से वंचित करता था। इसलिए राजनीतिज्ञों ने इसमें एक धारा जोड़ी, जिसमें व्यक्ति को इस बात का सबूत पेश करना होता था कि उसके किसी रिश्तेदार ने 1 जनवरी 1867 के पहले मत दिया था। दरअसल इस तिथि के पहले दक्षिण अमरीका में कालों को मत देने का हक ही नहीं था। यही कारण था कि 1895 से 1910 तक उनका कोई भी रिश्तेदार मत दे ही नहीं सका था। आगे चल कर यह धारा ‘‘ग्रैण्ड फादर क्लॉज़’’ कहलाई।

पेज 16: मिसेज बैथ्यून का स्कूल सार्वजनिक या सरकारी मदद से चलने वाला स्कूल नहीं था। डेयटोना बीच की नगर पालिका या फ्लौरिडा राज्य न इसे चलाते थे न कोई आर्थिक मदद देते थे। मिसेज बैथ्यून खुद भी इसे निजी स्कूल ही बनाए रखना चाहती थीं ताकि छात्राओं को क्या पढ़ाया-सिखाया जाएगा इस पर उनका नियंत्रण बना रहे। उनका पक्का विश्वास था कि उन्हें तमाम ऐसे कौशल सीखाने चाहिए जो सार्वजनिक स्कूलों में सिखाए नहीं जाते, जैसे खेतीबारी, वस्त्रों की सिलाई के कौशल।

पेज 23: जब स्कूल शुरू हुआ था मिसेज बैथ्यून का बेटा एल्बर्ट उसमें पढ़ने वाला अकेला लड़का था। 1908 में उसे एटलान्टा, जॉर्जिया में मिस लेनी के स्कूल में भेज दिया गया, जिसमें तब लड़कों को भी दाखिला दिया जा रहा था।

पेज 40: 1916 तक आते-आते भी समूचे संयुक्त राज्य अमरीका में काले छात्र-छात्राओं के लिए महज 67 हाई स्कूल थे। उस समय मात्र 20,000 काले बच्चे पढ़ने जाते थे। अधिकतर अफ्रीकी-अमरीकी बच्चे केवल पहली चार कक्षाओं तक की ही पढ़ाई करते थे।

रिचर्ड कैल्सो न्यू यॉर्क में रहते और काम करते हैं। वे 'करिक्युलम कॉन्सेप्ट्स' में स्टाफ लेखक हैं। उन्होंने स्टोरीस् ऑफ़ अमेरिका के लिए डेयस् ऑफ़ करेज, वेकिंग फॉर फ्रीडम की रचना भी की है।

एक सपने का निर्माण

मेरी बैथ्यून का स्कूल

1904 में मिसेज मेरी मॅक्लिओड बैथ्यून दिल में एक सपना संजोए और बटुए में डेढ़ डॉलर लिए डेयटोना बीच पहुँचती हैं। उनका सपना है शिक्षा द्वारा रंग भेद से विभाजित दक्षिण के अफ्रीकी-अमरीकी बच्चों के भविष्य का निर्माण।